भारतीय संत
साहित्य परंपरा

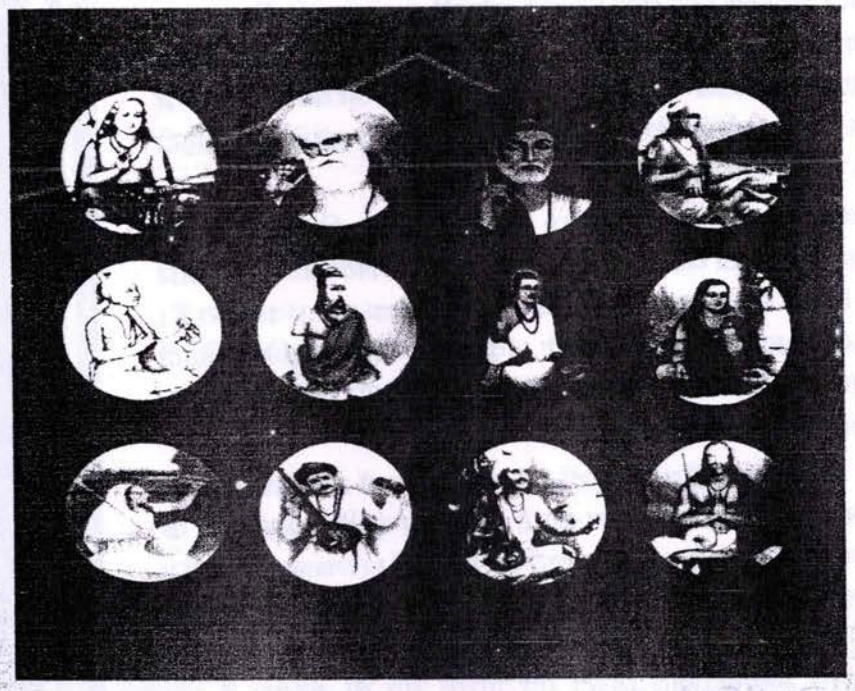

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

कर्नाटक के जिला हासन के श्रवणबेलगोला में जन्म। कर्नाटक के मैसूरु विश्वविद्यालय से बी.काम., एम.ए. और पी.एच-डी. उपाधियाँ प्राप्त। आगरा के केंद्रीय हिन्दी संस्थान से हिन्दी पारंगत और इलाहाबाद के साहित्य सम्मेलन से हिन्दी साहित्य रत्न प्राप्त। "नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य: एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य संपन्न। तुलसीदास, कबीर और हिन्दी व्यंग्य साहित्य पर विशेष अध्ययन की रुचि। 1992 से हिन्दी अध्यापन कार्य में संलग्न, वर्तमान में कर्नाटक के मंगलूरु के ऐकला पोंपै कॉलेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

'नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य: एक अध्ययन', 'हिन्दी के व्यंग्य सर्जक नरेंद्र कोहली', 'हिन्दी व्यंग्य साहित्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन', और 'हिन्दी में व्यंग्य विमर्श एवं नरेंद्र कोहली', विषय पर मौलिक ग्रंथ प्रकाशित हैं। 'मार्गदर्शी', 'हिन्दी मंगला', 'विहास वाहिनी', 'विहास वाणी', 'आधुनिक हिन्दी काव्य : एक अवलोकन', 'विहास मंगला', 'हिन्दी कहानी और वर्तमान समय', आदि का संपादन कार्य संपनन्न किया है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं में लगभग 30 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत और प्रकाशित हुए हैं। हिन्दी स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से 25 वर्ष से हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य में सक्रिय हैं। लगभग 10 राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठियों का आयोन किया। वर्तमान में मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरु, कर्नाटक और कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय महाविद्यालय हिन्दी प्राध्यापक संघ के अध्यक्ष हैं और मंगलूरु विश्वविद्यालय अध्यापक संघ (अमुक्त) के उपाध्यक्ष हैं।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

Price Rs 390.00
ISBN 979-888606829-0

NOTION PRESS

India. Singapore. Malaysia.

Published by Notion Press 2022
Copyright © **Dr.S.A.Manjunath** 2022
All Rights Reserved.

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

अनुक्रम

अनुशंसा.....vii

संपादकीय 11

खंड -1 .. xvii

1. संत साहित्य परंपरा – डॉ.पुष्पेंद्र दुबे 1

2. भारतीय संत साहित्य: एक विश्लेषण - सुमेर खजूरिया 25

3. भारतीय संत साहित्य: एक विवेचन - डॉ.वी.रश्मी अरस..... 39

4. भारतीय संत परंपरा - डॉ. सुवर्ण गाड..... 51

5. संत साहित्य की दृष्टि में 'गुरु' की सत्ता - प्रो. गिरीश्वर मिश्र..... 59

6. तमिल साहित्य में संत काव्य परंपरा - प्रो.एम.ज्ञानम 73

7. कर्नाटक की संत साहित्य परंपरा - डॉ.एस.ए.मंजुनाथ 93

8. महाराष्ट्र की उन्नत संत परंपरा - प्रो.धन्यकुमार जिनपाल..... 117

9. हिन्दी साहित्य की संत परंपरा - डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल..... 131

10. पंजाब की संत साहित्य परम्परा - मनजीत कौर..... 139

खंड -2 ..153

11. संतों के संत आदिशंकराचार्य - डॉ.के.सी.अजयकुमार 155

12. नैतिक महाधिकार का मूल्यों-पत्र 'तिरुक्कुरल' में स्वच्छ जीवन का दिग्दर्शन - डॉ.जयशंकर बाबु सी 167

13. केरल के नवोत्थान नायक चट्टम्बिस्वामी - डॉ.संगीता पी 187

14. केरल के संत श्री नारायण गुरूजी - डॉ.सुनीता एच.बी. 191

15. कर्नाटक संगीत के संत पुरंदरदास – डॉ.विनयकुमार यादव 197

16. संत साहित्य और कवि योगि वेमना - डॉ.जी. रेणुका 205

17. मीरा; नेह की डोर की खातिर तेरे घुँघरू को सलाम - डॉ.राम आल्हाद चौधरी 217

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

अनुक्रम

18. राजस्थान गौरव : भक्त शिरोमणी मीरा – छत्र छाजेड़ फक्कड़ 239
19. कबीर: अवधारणाओं का पुनराविष्कार - प्रो.चित्तरंजन मिश्र 259
20. संत योगी बाबा लाल दयाल - डॉ.अतुला भास्कर 271
21. संत सूरदास के काव्य में ब्रज संस्कृति - डॉ.मिथिलेश शर्मा 277
22. लोकमंगलकारी संत तुलसी और उनका रामचरित मानस - श्रीमति चंद्रिका राव 289
23. पंजाब के संत सिद्ध पुरुष बाबा साईंदास - डॉ.स्नेहा खन्ना 301
24. भारत की संत परंपरा और परमहंस का योगदान - डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी 309
25. संत रामकृष्ण परमहंस - डॉ.रेशमी पांडा मुखर्जी 317
26.ओड़िया संत साहित्य परंपरा और संतकवि भीम भोई-डॉ.चक्रधर पधान.. 327

****

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

21. संत सूरदास के काव्य में ब्रज संस्कृति

-डॉ. मिथिलेश शर्मा*

भागवत में 'ब्रज' शब्द का अर्थ 'क्षेत्र'विशेष- के रूप में ही लिया गया है। वहाँ ब्रज के लिए ग्राम शब्द का सम्बोधन किया गया है। 'पुर' से छोटा 'ग्राम' और उससे भी छोटी' अहीरों की बस्ती' वाले गाँव को 'ब्रजकी संज्ञा ' दी गईहै। १६ वीं शताब्दी में 'ब्रज' शब्द व्यापक अर्थ में चौरासी कोस में रहनेवाली जनता के लिए प्रयुक्त हुआ और उसे 'ब्रजमंडल' नाम से अभिव्यंजित किया गया। आज उसे 'ब्रजप्रदेश' भी कहा जाता है।

जिसका अर्थ गतिशीलता ,ब्रज शब्द संस्कृत धातु ब्रज से बना है" से है। जहाँ गाय चरती हैं और विचरण करती हैं वह स्थान भी ब्रज कहा गया है। अमरकोश के लेखक ने ब्रज के तीन अर्थ प्रस्तुत किए हैंगायों) गोष्ठ - (का बाड़ा, मार्ग और वृंद (झुंड), संस्कृत के वृज शब्द से ही हिन्दी का ब्रज शब्द बना है।"१

'ब्रज' शब्द का काल- क्रमानुसार अर्थ विकसित हुआ है। वेदों, रामायण और महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में इसका प्रयोग गोशाला , (गो- स्थान(के लिए हुआ, वहीं पौराणिक काल में गोप-बस्ती के लिए प्रयुक्त किया गया। उस समय तक यह शब्द किसी प्रदेश या क्षेत्र विशेष की पहचान नहीं था।

"संस्कृति मानव द्वारा समाज के एक सदस्य के रूप में अर्जित ज्ञान, विश्वासों, आस्थाओं, कला- कौशलों, आचार-विचारों, कानूनों, रीति-रिवाजों तथा अन्य क्षमताओं का एक समग्र जटिल स्वरूप है"

पूरा ब्रजप्रदेश अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। संस्कृति से अभिप्राय संस्कार डालनेवा[illegible]कृति एक सामाजिक तत्व है जिसे किसी समय सीमा में बाँधना उचित नहीं है। अतः

Certified as TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

जब हम किसी देश की संस्कृति की बात करते हैं तब हमारा अभिप्राय उस देश के आचार- विचार, रीति-रिवाज, उत्सव-पर्व, कला- कौशल, पूजा-अर्चना, ज्ञान- विज्ञान आदि से होता है। ब्रज संस्कृति से भी हमारा तात्पर्य यही है।

संस्कृति को परिभाषित करते हुए वासुदेवशरणअग्रवाल लिखते हैं वर्तमान और भावी जीवन का महत्वपूर्ण अंग ,संस्कृति मनुष्य के भूत" – रही है। हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है। संस्कृति हवा में नहीं रहती इसका मूर्तिमान रूप होता है। जीवन के नानाविधि रूपों का समुदाय संस्कृति है।"[३]

संस्कृति वास्तव में वह जीवन पद्धति है जिसकी स्थापना मानव " विष्कारों का संग्रह है उन आ ,व्यक्ति तथा समूह के रूप में निर्माण करता है जिनका अन्वेषण मानव ने अपने जीवन को सफल बनाने के लिए किया ।"है[४]

इस प्रकार संस्कृति की कोई निश्चित परिभाषा न होते हुए भी ऐसा कहा जा सकता है कि संस्कृति मानव के पूर्ण व्यक्तित्व में समाहित होती हैहै जो मानव की क्षमता पर व्यक्तित्व से अस्तित्व का निर्माण होता , निर्भर करता है। अतः मनुष्य के सतत प्रयत्न का सार्थक परिणाम ही संस्कृति है।

महाकवि सूरदास ने अपने ग्रंथ 'सूरसागर' में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का मुख्य रूप से वर्णन किया है। सूरदास का समस्त जीवन ब्रजप्रदेश की रज में ही व्यतीत हुआ था। ब्रजभूमि में ही उनके आराध्य श्रीकृष्ण ने अपनी अनूठी बाललीलाएँ की थी। सूर ने उन पलों को महसूस किया जिनमें कृष्ण रमे थे। अतः सूर द्वारा वर्णित ब्रजसंस्कृति के दर्शन उनकी अमर कृतियों में किए जा सकतेहैं।

ब्रजसंस्कृति में पुत्र जन्म, नामकरण, कर्णछेदन, अन्नप्राशन संस्कार, वर्षगांठ, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह में विभिन्न रीति-रिवाज, अनेक देवी देवताओं की पूजा,अर्चना- पर्व, उत्सव, शृंगार-सज्जा, पकवान, संगीत आदि की भी प्रथा आज प्रचलित है। पर्वों, उत्सवों जादू टोना

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

	Junior Dept. c Univers
3	Prof. P Depart Philoso of Mun
4	Ms. Ma Mr. Viv Departi Philoso Univers UP
5.	Ms. An Padhye Sonopa College Mahara

Day 2- January 5, :
Plenary Session VI
Time: 2.45 pm to
Venue: MPSS Hall

Chairperson: **Prof. Meenal** Dept of Philos	
Sr. No.	
1	Ms. San Researc Mumba
2	Mr. Sub HoD, Co R. J. Coll
3	Dr. Snel Vice Prir Dept. of College,
4	Dr. Mar Upagad Govt. Vi Institute and Hun Amravat

लोकप्रचलित रूढ़ियों आदि का चित्रण जिस सूक्ष्मता के साथ महाकविसूरने किया है वह उनकी वाक् चातुर्यता का ही परिणाम है।

सूर ने भी अपने परम आराध्य कृष्ण को आलंबन बनाकर लोक कल्याण हेतु जिस काव्यधारा का सृजन किया था ,वह चिरकाल तक बिना किसी बंधन के बहती रही और परवर्ती कवियों ने भी बिना किसी भाषा विवाद के उसे समृद्धि प्रदान की।

पुत्र जन्म आर्य संस्कृति का एक महत्वपूर्ण संस्कार है संतान के बिना एक माँ अपने जीवन को अधूरा अनुभव करती है। माँ यशोदा कृष्ण जन्म के अवसर पर नंदबाबा से कहती हैं -

"गोकुल प्रकट भए हरि आइ।
अमर ,संहारन-उधारन असुर-
अंतरजामी त्रिभुवन राइ॥
माथै धरि वसुदेव जुल्याए ,
नंद घर गए पहुँचाई।-महर-
जागीमहरि,पुत्र-मुखदेख्यौ,
पुलकिअंग उर मैं नसमाइ॥
गद्द द्कंठ बोलि नहिं आवै,
हरषवंतह्वै नंददुलाइ।
आवहुकंत,देवदरसनभए,
पुत्रभयौ, मुख देखौ धाइ॥
दौरि नंद गए, सुत मुख देख्यौ,
सोसुख मो पै बरनिन जाइ"।५

पुत्र जन्म के अवसर पर बधाई गाए जाने का ब्रज में बहुत ही सुंदर रिवाज है जिसके फलस्वरूप दूब ,दधि ,रोली थाल में सजाकर मंगलगीत मधुर स्वर में गाए जाते हैं। सूरसरावली और सूरसागर में इन संस्कारों का सूरदास जी ने बड़ा ही सजीव वर्णन किया है।

"सुत को जनम यशोदा के गृह,

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

ताल गितुमहि बुलावति।
कन कथार भरिलै दधि रोचन बेगि चलौ मिलि गावति॥
साँचेहु सुत भयौ नंद नायक के हौना दिन बौरावति"॥६

चारों तरफ हर्षोल्लास छाया हुआ है। नंद को सभी ताली देकर नचा रहे हैं। नंद भी खुशी से झूम रहे हैं। सब लोग अपना अपना-नेग मांग रहे हैं। सोहर गाए जा रहे हैं छटी माँ की पूजा की तैयारी हो रही है, बड़ी उमंग से सभी परंपराओं का पूर्ण निर्वाह सूर ने किया है -

माई"आजुहोबधायौबाजै,नंद गोपराइ के।
यदुकुल यादव जन्मे हैं आइ के॥
आनंदित गोपी ग्वाल नाचैकर , देदै ताल।
अति आह्लाद भयो यशुमति माइ के॥
शिर पर दूबधरि, बैठे नंदसभा मधि।
द्विजन को गाइ दीनी बहुत मंगाई कै"॥ ७

ब्रज प्रदेश में बच्चा जब छह दिन का होता है तो छटी का संस्कार भी किया जाता है जिसमें सभी परिवारी जन मिलकर बड़े आनंद के साथ सोहर गीत गाते हैं।

"काजर रोटी आनोरी, मिलिकरौ छठी को चार।
एपन कीसी पूतरी,सब, सखियनकियौ है शृंगार ॥"८

बच्चे के नामकरण के समय ब्राह्मण, चारण और बंदीजनों का नंद बाबा के घर आकर दुर्बा हल्दी देना तथा गर्ग मुनि का जन्म पत्री बनाकर बच्चे की भविष्यवाणी करना यह ,प्रथा आज भी चरितार्थ है। अन्न प्राशन संस्कार भी ब्रजप्रदेश में होता है। छटे महिने में कृष्ण के अन्नप्राशन का उल्लेख भी 'सूरसागर' में मिलता है। इस अवसर पर घर में विभिन्न प्रकार के पकवान बनाये जाते हैं और स्वयं नंदबाबा स्वर्ण थाल में घृत और मधु डालकर अपने हाथ से कृष्ण का मुंह जूठा कराते हैं।

बच्चा जब एक साल का हो जाता है तो उसका जन्मदिन मनाने की प्रथा चली आ रही है। इस अवसर पर पूजाभोज्य तथा ,संगीत ,हवन यथाशक्ति दान देने की परिपाटी है।बालकृष्ण की वर्षगांठ की बड़ी

Certified as TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

धूमधाम से मनाई जाती है। सूरदास जी ने उसका भी बहुत अनूठा वर्णन किया है-

"अलि, मेरे लालन की आजु बरष गाँठि।
सबै सखिनि बोलावोशुभ , करि मंगलगान करावो॥
चंदन आंगन सबन लिपावों मोतिअन को तुम,चौक पुरावो॥
उमंगि अंगनि आनन्द सौ तूर बजावो मेरे कहे तुम विप्र बुलावों॥ ,

संपूर्ण भारत में पहले स्त्री-पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते थे। ब्रजप्रदेश में भी यह प्रथा प्रचलित थी। इसके फलस्वरूप, कर्णछेदन एक उत्सव के रूप में मनाया जाता था. इसी प्रथा के अनुरूप कृष्ण का भी कर्ण छेदन हुआथा।

"कान्ह कुँवर को कन छेदनों है, हाथ सुहारी भेलीगुरकी।
विधि विहँसत हरि हँसत हेरि हरियशु,मति के धुक धुकी उर की"।। १०

यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक संस्कारों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है मनुस्मृति में भी इसका उल्लेख मिलता है। कंस वध के उपरांत वसुदेव द्वारा कृष्ण और बलराम का उपनयन संस्कार भी कराया गया था इसका भी उल्लेख 'सूरसागर' में मिलता है।

विसरयौ"कुल व्यवहार विचारि।
हरि हलधर को दियो जनेऊ, करिषटरस जेवनार॥
विधि सोंधेनु दई बहुविप्रनि, सहित सर्वलंकार॥"११

सृष्टि निर्माण हेतु विवाह परम आवश्यक प्रक्रिया है विद्वानों द्वारा हिंदूविवाह की प्रमुख आठ पद्धतियाँ बतलायी गई हैं। जिनमें- ब्राह्म विवाह, दैव विवाह, आर्ष विवाह, प्राजस्य विवाह, असुर विवाह, गंधर्व विवाह, राक्षस विवाह, तथा पैशाच विवाह।

इन आठ स्वरूपों में सर्वश्रेष्ठ ब्राह्म विवाह है जिसमें पूरे विधि-विधान से वर और कन्या आपस में आजीवन साथ रहने की प्रतिज्ञा लेते हैं। यद्यपि, सूर ने राधा और कृष्णके गंधर्वविवाह का उल्लेख किया है फिर भी वैवाहिक रीति-रिवाजों का वर्णन करने में कोई कृपणता नहीं की है।

Certified as TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

सभी परंपराएँ आज भी ब्रजमंडल में प्रचलित हैं। जैसे – गोद भरना (सगाई), विवाह स्थल पर आने के लिए कृष्ण द्वारा मुरली बजाकर सभी को बुलाना, छप्पन कोटि बारातियों का चलना, वधू का गौरीपूजन, भांवरों के लिए मंडप तैयार करना, मंडप को कदली के खंभों और अनेक प्रकार के पुष्पों से सजाना, शुभमुहूर्त में चौरी का निर्माण होना, दुलहिन का दुल्हा को देखने की इच्छा प्रकट करना, वर को मीठा खिलाना, पाणिग्रहण संस्कार व भाँवर लेना, विवाह के बाद वर – वधू सुपारी और अंगुठी डालकर जुआ खेलना, गोपियों द्वारा गाली गीत गाना, यथाशक्ति दहेज देना, वधू के गृह प्रवेश में बहन द्वारा आरता करना और पानी उतार कर पीना, कंगन खुलना आदि अनेक परंपराओं के साथ मांगलिक अनुष्ठानों का वर्णन कर सूर ने विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार के रूप में दर्शाया है। १२

"गोपीजन सबनेवते आंई, मुरली ध्वनिते पठइ बुलाई॥"१३

"दलहि निछोरि दुलह को कंकन की, बोलि बबा वृषभान"१४

विवाह आदि में महिलाओं द्वारा गाली गाने की भी परंपरा भी ब्रज में है -

"उत कोकिला गण करैं को लाहल, इत सकल ब्रज नारियाँ।
आई जुनिवती दुहूं दिशि, मनोदेति आनंद गारियाँ ॥"१५

भारत में विभिन्न देवी देवताओं की पूजा अर्चना की जाती है। परिणाम स्वरूप ब्रज संस्कृति में पूजा-व्रत, कार्तिक मास में स्नान आदि का भी बड़ा ही महत्व है। पंच देवताओं)पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि) के साथसाथ- भक्तिकाल में कृष्ण के अतिरिक्त शिवपार्वती पूजा, इंद्र पूजा, गन गौरपूजा, यमुनास्नान, शालिग्राम पूजा आदि की वंदना समय-समय पर की जाती थी। कृष्ण-भक्तिकाव्य में इंद्रदेवता के प्रति लोकजीवन की गहरी आस्था व्यक्त की है। इंद्र को कुलदेवता बताकर उसकी महत्ता को

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

स्वीकार किया गया है। कृष्ण ने इंद्रपूजा रुकवाकर गोवर्धन पूजा को स्वीकार किया ,इसका उल्लेख 'सूरसागर' में मिलता है।

"पूजा मेटि इंद्रकीपूजत,गिरि गोवर्धन राज।
सूरदास सुरपति गर्वित भयो मैं देवन शिरताज ॥"१६

शिव –गौरी पूजा का विधान सभी वेद-शास्त्रों में किया गया है। पूरे भारतवर्ष में शिवपार्वती- महिमा प्रतिष्ठित है। सूर ने भी नंदबाबाद्वारा शिव की सामूहिक पूजाका उल्लेख कियाहै -

"नंद सब गोपीग्वाल समेत ,गए सरस्वती के तट एकदिन शिवअंबिका पूजा हेत॥"१७

कृष्ण द्वारा सूर्य को अर्घ्य देने का उल्लेख" में भी 'सूर सारावली' मिलता है।"१८

भारत आस्था और विश्वासों का देश है। इसी के फलस्वरूप, लोक जीवन में तमाम मान्यताएँ प्रचलित हैं। जैसे- शकुन-अपशकुन, नजर, जादू- टोना, भाग्य भरोसा, जीवन में शुभ होने की मंगलाकांक्षा, पुर्नजन्म में विश्वास, शपथ खाना आदि तमाम बातों परआम आदमी का भरोसा है। सूर ने भी अपने काव्य में कृष्ण की माखनचोरी पकड़े जाने पर सौंगंध खाने की बात - कही है तो कहीं माँ यशोदा द्वारा भी कृष्ण को अपना बेटा सिद्ध करने के लिए सौगंध खाने का उल्लेख किया है।संपूर्ण ब्रजप्रदेश पर्व और उत्सव का भंडार है। हर दिन कोई न कोई उत्सव यहाँ मनाये जाते हैं। सूर ने भी अपने काव्य में प्रायःसभी त्योंहारों का बड़ी धूमधाम से चित्रिण किया है. जैसे- श्रावण पूर्णिमा को राखी का त्यौहार,आश्विन शुक्लदशमी को विजयदशमी कात्यौहार, कार्तिक कृष्णत्रयोदशी को धनतेरस का त्यौहार, नरकचतुर्दशी, दीपावली का महत्वपूर्ण त्यौहार, गोवर्धनपूजा (अन्नकूट), दीपावली के तीसरे दिन भाईदूज का त्यौहार भी ब्रजप्रदेश में बड़ेउत्साह से मनाया जाता है। हिंडोला, फाग, होली आदि का सूर ने अपने काव्य में यथोचित वर्णन किया है।

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

दीपावली का भव्यवर्णन -

"आजु दीपति,दिव्य दीपमालिका।
मनहुँ कोटि रवि चन्द्र कोटि छवि,
मिटि जो गई निशि कालिका॥
गोकुल सकल विचित्र मणि,
मंडित सोभित झाक झबझालिका॥
झल मल दीप समीप सौंज भरि,
लैकर कंचन था लिका"[१९]

होलीका पर्व तो ब्रजसंस्कृति की आन-बान है। होली को लेकर एक अलग प्रकार की उमंग ब्रज प्रदेश में देखी जाती है। बसंतऋतु का आगमन , आम्र की मंजरियों पर ,बनों में महुआ का महकना ,खेतों में फसल का पकना ,कोयल की कूक का स्वर सभी के हृदय में स्नेह की बंशी बजा देता है। और इस मादकता भरे वातावरण में आता है पावन होली का पर्व जो कि फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाया जानेवाला ऐसा सामाजिक उत्सव है। जहाँ, बिना किसी भेद-भाव के छोटे,बड़े- स्त्री-पुरुष सभी मिलकर मनाते हैं। ब्रज की अनूठी होली जगप्रसिद्ध है। इस होली की छटा के दर्शन के लिए हजारों श्रद्धालु हर वर्ष यहाँ एकत्रित होते हैं और कृष्ण की माधुर्य फाग क्रीड़ा का आनंद लेते हैं।

"खेलत फागु कहत हो होरी,
उत नागरी समाज विराजति, इत मोहन हलधर की जोरी॥"[२०]
"हो आजु नंदलाल सों खेलोंगी सखी होरी,
ललिता विशाखा अंगन लिपावो चौक पुरावो तुमरोरी ॥"[२१]
"और नसों खेले धमार,श्याम मोंसों मुखहूंनबोले।
नंद महर को लडिलो मों सों ऐंठ्यों ही डोले॥
राधा जू पनिया निकसीवाको घूँघट खोले।
सूरदास प्रभु साँवरोंहियराबिच डोले॥"[२२]

ब्रजप्रदेश में पूरे श्रावण मास में गाये जाने वाले झूलागीतों - सा लगा -कोहिडोला या मल्हार कहा जाता है। इस ... मेला

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai

कृष्ण के-रहता है। प्रत्येक घर राधाझूलागूँजता रहता है। सूर ने गीतों से-हल्की -भी इस अद्‌भुत छटा को बड़ी रमणीयता से प्रस्तुत किया है। हल्की बूदों से राधा भीग न जाए तो कृष्ण उन्हें अपना पीताम्बर उड़ा रहे हैं और राधा अपनी चुनरी कृष्ण को ओढा रहीं हैं।

,कुंजन में दोऊआवतभीजत"
ज्योंज्यों बूँद परत च-ूनर पर।
त्यों... आवत॥ कुँजन में ,त्यों हरी उर लावत-.
अधिक झंकोरहोतमेघन की ,
द्रुम तरु छिन ... छिन गावतआवत॥ कुँजन में-
वे हँसि ओट करतपीताम्बर,
वे चुनरी उन उढावत ... आवत॥ कुँजन में ,
भीजे राग रागिनी दाऊ,
भीजे तन छवि पावन ... आवत॥ कुँजन में ,
लै मुरली कर मंद घोर स्वर,
राग मल्हार बजावत ... आवत॥ कुँजन में ,
तैसे ही मोर कोकिला बोलत,
अधिक पवन घन भावत ... आवत॥ कुँजन में,
सूरदास प्रभु मिलन परस्पर,
प्रीत अधिक उपजावत ..."आवत॥ कुँजन में,[२३]

महाकवि सूर ने गोपविधि -ग्वालों के मनोरंजन हेतु नाना-,चौगार खेल ,मिचौनी-आँख ,दौड़ना- क्रीड़ाओं का भी वर्णन किया है। जैसे के 'सूरसागर' क्रीड़ा आदि का उल्लेख-शर ,नृत्य-गीत ,वादन-बंशी ,तड़ी-गैद नवम और दशमस्कन्ध में मिलता है।

खेलत हैं करिचै ,ग्वाल सखा सब संग लगाए"नु॥
कोउगावत ॥"कोउविपानकोउवेनु ,कोउ मुरली बजावत ,[२४]

बाल मनोरंजन के साथबुद्धि साथ वयस्क लोगों की शक्ति एवं-,युद्ध -मल्ल -प्रदर्शनकरने वाले खेलों का भी सूर ने वर्णन किया है। जैसे आदि। (द्यूतक्रीड़ा) चौपड़ ,मृगया सूर ने ब्रज में प्रचलित विभिन्न आभूषणों का भी बखूबी उल्लेख किया है। जैसे ,कर्णफूल ,कंठश्री ,मोतीमाला ,तिलक -

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

,दुलरी ,बेसरि ,बाजूबंद ,खडुआ ,कंगन ,बिछिया ,नूपुर ,करधनी ,हमेल भूषा एवं शृंगार के प्रसाधनों को भी बड़ी -टीका आदि। सूर ने स्त्रियों की वेश पचरंग ,तिपाड़ का लहंगा- कलात्मकता से चित्रित किया है। जैसेसाड़ी , सुगंधित ,फुलेल-तेल ,बिंदी ,महावर ,अंजन ,मांग सिंदूर ,उबटन ,अंगिया में किया है। 'सूरसागर' विन्यास आदि का वर्णन-केश ,दर्पण ,द्रव्य

ब्रज संस्कृति में खानपान की जितनी विविधता दिखाई देती है - उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। सूर ने अपने काव्य में विभिन्न पर्वों परभोजन की लंबी श्रंखला गिनाई है। सूरसाहित्य में प्रातः ,ज्यौनार-दोपहर ,कलेवा- अनेक ,बियारी आदि का उल्लेख किया है। साथ ही-रात्रि ,छाक-तीसरे प्रहर आदि का भी चित्रण (पेय पदार्थ) सरबत ,फल ,मेवे ,प्रकार के पकवान – कुछ गिरा रहे हैं ,किया है। कृष्ण कुछ खा रहे हैं

ज"ेवतस्याम नंद जू की कनिया।
कछुक खात कछुधरनिगिरावत छवि निरखतिनन्दरनियाँ॥ ,
बरी बरा बेसन बहू भाँतिनि व्यंजन विविध अगनियाँ॥ ,
डारत खात लेतअपनैं कर रुचि मानत दधि दोनियाँ॥ ,
मिस्री दधि माखन मिश्रित ॥"करि मुख नावत छवि धनियाँ ,[२५]

ब्रज संस्कृति में वास्तुकलामूर्तिकला एवं चित्रकला का त्रिवेणी , मथुरा ,संगम है। सूर ने नंद के मणिमय आँगन और मणिजटित स्तंभों भव्य मणिमय अट्टालिकाओं ,स्वर्णकोट हीरों व रत्नों से जड़े कंगूरों -वर्णन में सूर ने दे ,का वर्णन वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। साथ हीवी शारदा , सालिग्राम आदि देवताओं की पूजा स्वरूप उस युग विशेष की ,सनक ,नारद बड़ी समृद्ध रही है। यहाँ मूर्तिमय झाँकी प्रस्तुत की है।ब्रज की चित्रकला भी के चित्रों में रूप सौन्दर्य की अपेक्षा भाव सौन्दर्य की अधिकता है। उत्सवों ,रंग व फूलों से रंगोली बनाना -मेंदीपावली पर गेरू से भूमि व दीवारों पर चित्र बनानाव मंगलकार्यों में चौक पूरना आदि के झलकियाँदृष्टव्य है। सूर , -चित्रों का ऐसा ताना-भंगिमा के साथ शब्द-पूर्ण भाव ने अपने काव्य में बाना पिरोया है कि उनका प्रत्येक पद चित्रमय बन जाता है।

निष्कर्षतःसूरकाव्य मेंवर्णित ब्रजसंस्कृतिमानवजीवन को प्राप्त एक ऐसा उपहार है जो आज भी लोकजीवन में व्याप्त है। सूर लोक संस्कृति

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

मर्मज्ञ हैं। लोक में प्रचलित सभी मान्यताओं को सूर ने बखूबी अपने काव्य में जगह दी है। जबतक सृष्टि में प्रेम का थोड़ा भी अंश रहेगा तब तक सूर की प्रासंगिकता हर युग में बरकरार रहेगी। वास्तव में सूर की कविता सामंती व्यवस्था के प्रभावों को कुचलती हुई एक ऐसे समाज की नींव डालती है जिसमें मानवीय संबंधों का सहज व स्वतंत्र विकास हो सके।

पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण की बीमारी भारत में बहुत पुरानी है। भारतीय आभिजात्यवादी वर्ग ब्रिटिश शासन काल से ही स्वयं को पाश्चात्य संस्कृति में रंगने की पुरजोर कोशिश कर रहा है, किंतु ९० के दशक में भारत की उदारवादी नीति और विश्व के लिए भारतीय बाजारों के खुलने से यहाँ सूचना क्रांति युग आरंभ हुआ तथा एक नए वैश्विक परिवार का जन्म हुआ। चूंकि, समृद्ध और ताकतवर वर्ग की जीवनशैली हमेशा फैशन का विषय होती है। अतः पाश्चात्य जीवनशैली की नकल भारत में इतने बड़े पैमाने पर हुई कि पाश्चात्य संस्कृति भारतीय आभिजात्यवादी वर्ग से भी आगे बढ़ कर आमजन तक पहुँच गयी। घरघर - में पाश्चात्य खानपान, वेशभूषा, रहन-सहन अपना लिया गया।परिणामस्वरूप, भारतीय संस्कृति का ह्रास होने लगा। वर्तमान में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी भाषा का महत्वतथा बदलती जीवनशैली के पाश्चात्य प्रभाव को देखा जा सकता है। इस प्रभाव से भारतीय सभ्यता में संस्कृतियों के लुप्त होने का खतरा महसूस किया जाने लगा है, ऐसे समय में सूरदास के काव्य में ब्रज संस्कृति का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। सूर का काव्य विभिन्न भारतीय संस्कृतियों का संगम है इसमें जितनी डुबकियाँ लगाओगे उतना ही आनंद प्राप्त कर सकोगे।

संदर्भग्रंथ सूची:

1. http://ignca.nic.in
2. https://nios.ac.inmodule-5
3. वासुदेवशरणअग्रवाल ,इलाहबाद -प्रकाशन संस्कृति ...र 1952 प्रथम संस्करण ,साहित्य भवन, पृ .1

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

4. जोशी लक्ष्मण शास्त्री ,'वैदिक संस्कृति का विकास -प्रकाशन ' .पृ 1957 हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर ,बंबई2
5. http://nilambarwiki.appspot.com)
6. सूरसागर दशम स्कन्ध/ नागरी प्रचारणी सभा/ पृ .10025 पद ,, पृ .102, पद 34, पृ .104, पद 84, पृ .111, पद 86, पृ .112, पद 25, पृ .472, पद-57तक 348 से 347 पृष्ठ ,, पद 3, पृ . 347, पद 5, पृ.347, पद 4,पृ.347, पद 53, पृ .211, पद 93, पेज. 415, पद1,पृ. 445, पद 95, पृ.431, पद85, पृ.153.
7. सूर सरावली, पद 696, प्रकाशन .सं ,मथुरा अग्रवाल प्रेस-2014
8. https://hi.krishnakosh.orgकृष्ण
9. https://pushtimarg.wordpress.com
10. https://sites.google.com/site/bhajanradhakrishn/pustaka/savana
11. सूरदास सं ,धीरेन्द्र वर्मा सूरसागर .बाललीला के पद-

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
रामनिरंजन झुंझुनवाला कॉलेज,
घाटकोपर मुंबई,– 4000–ईमेल86smithilesh68@gmail.com

****

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.